भारत मे बौद्ध धर्म का जन्म - भारत की सामाजिक - धार्मिक स्थिति

भारत मे बौद्ध धर्म का जन्म 6वीं - 5वी शताब्दी ईसा पूर्व मे हुआ था, जिसका श्रेय सिद्धार्थ गौतम (बुद्ध) को जाता है। इसकी सामाजिक और धार्मिक स्थिति यह थी कि इसने पारंपरिक जाति व्यवस्था का विरोध किया और निम्न जातियों को आकर्षित किया, जिससे सामाजिक समानता को बढ़ावा मिला। सम्राट अशोक जैसे शासकों ने इसका संरक्षण और प्रचार किया जिससे यह भारत और अन्य क्षेत्रों मे एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक शक्ति बन गया।

बौद्ध - धर्म के संस्थापक, विश्व के प्रमुख धर्म सुधारकों एवं दार्शनिकों मे से एक "महात्मा बुद्ध" है। महात्मा बुद्ध ने तत्कालीन ब्राह्मण धर्म की व्यवस्था पर अपने विचारों से कुठाराघात किया तथा जाति - व्यवस्था का विरोध और नैतिक मूल्यों पर बल देते हुए नवीन सिद्धांतो का प्रतिपादन किया।

* बौद्ध धर्म का जन्म :-

- संस्थापक :- सिद्धार्थ गौतम जिन्हें बुद्ध (जाग्रत व्यक्ति) कहा जाता है
- जन्म :- उनका जन्म लगभग 563 ई०पू० मे लुम्बिनी मे हुआ था, जो वर्तमान नेपाल और भारत की सीमा पर है।
- ज्ञान की प्राप्ति :- 16 वर्ष की अवस्था मे विवाह, एक पुत्र और 12 वर्षों के गृहस्थ

जीवन के पश्चमात लगभग 29 वर्ष की अवस्था मे घर त्याग दिया। उन्होने 49 दिनों तक ध्यान करने के बाद गया (बोधगया) मे एक पीपल के वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया। जिसदिन उन्हे ज्ञान की प्राप्ति हुई वे दिन वैसाख पूर्णिमा का था। इस घटना को "सम्बोधि" (Great Enlightenment) कहा गया। जिस वृक्ष को नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था उसे "बोधिवृक्ष" कहते है। इस घटना के उपरांत ही सिद्धार्थ को 'महात्मा बुद्ध' कहे जाने लगे।

- पहला उपदेश :—

ज्ञान प्राप्ति के पश्चात बुद्ध ने काशी की ओर प्रस्थान किया तथा ऋषिपत्तन (सारनाथ) पहुँचे सारनाथ मे महात्मा बुद्ध ने सर्वप्रथम पांच ब्राह्मणों को उपदेश दिया। ये ब्राह्मण महात्मा बुद्ध से बहुत प्रभावित हुए और उनके शिष्य बन गए। इन शिष्यों को 'पंचवर्गीय' कहा जाता है। महात्मा बुद्ध

द्वारा इन शिष्यों को दिए गए उपदेशों की घटना को 'धर्म-चक्र प्रवर्तन' (Turning the Wheel of the Law) कहा जाता है। शीघ्र ही शिष्यों की संख्या 60 हो गई। महात्मा बुद्ध ने धर्म का प्रचार करने के लिए एक संघ की स्थापना की। डॉ राजबलि पाण्डेय ने लिखा है कि यह संसार का पहला प्रचारक संघ था।

• सामाजिक-धार्मिक-पृष्ठभूमि :-

बौद्ध धर्म का उदय एक ऐसे समय में हुआ था जब ब्राह्मणवादी अनुष्ठान बलि प्रथा और जाति व्यवस्था से लोगों असंतुष्ट थे, यह पारंपरिक धार्मिक व्यवस्था के एक विकल्प के रूप में उभरा।

* बौद्ध धर्म की सामाजिक-धार्मिक स्थिति :-

• समानता और जातिवाद का विरोध :-

बौद्ध धर्म जातिगत भेदभाव में विश्वास नहीं करता था और सभी जातियों के लोगों के साथ समान व्यवहार करता था।

* इसने निम्न जातियों और गैर ब्राह्मणों को आकर्षित किया जो समानता पर आधारित नैतिक और आध्यात्मिक मार्ग की तलाश में थे।

* बौद्ध मठों और संघों का विकास :-

• मठवासी व्यवस्था (संघ) विकसित हुई जिसमें बौद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए विस्तृत नियम थे।

• ये मठ शिक्षा, ध्यान और सामुदायिक सेवा के केंद्र बने।

• यहां तक कि महिलाओं के लिए भिक्षुणी संघ की स्थापना, प्राचीन भारतीय समाज में लैंगिक समानता के प्रति एक प्रगतिशील कदम था।

* राज्य संरक्षण और प्रसार :-

• मौर्य साम्राज्य के सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाया और इसका पूरे एशिया में प्रचार किया, जिसके विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बौद्ध धर्म ने भारतीय संस्कृति और जीवन पर गहरा प्रभाव डाला और कला तथा वास्तुकला में योगदान दिया।

* बौद्धिक और सांस्कृतिक प्रभाव:

- मठ, नालंदा और तक्षशिला जैसे प्रमुख विश्वविद्या में बदल गए जहाँ बौद्ध दर्शन के अलावा चिकित्स खगोल विज्ञान और तर्क शास्त्र जैसे अन्य विषयों की भी शिक्षा दी जाती थी.
- बौद्ध धर्म ने आधुनिक विज्ञान को मौलिक धारणाओं के अनुरूप स्वतंत्रता और आत्मज्ञान की अवधारणाओं को भी बढ़ावा दिया।